संस्तुतिपत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

कोल्हापुर

दिनांक : 26 JUN 1996

डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
एम.ए.,बी.एड.,पीएच.डी.
अधिव्याख्याता, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.प्रतिभा नामदेवराव चिले ने मेरे निर्देशन में "उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाएँ" लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर, की एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए सफलतापूर्वक एवं पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोधछात्रा के प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर
दिनांक : 26 JUN 1996

डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
शोध-निर्देशक

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल्. की उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

(कु.प्रतिभा नामदेवराव चिले)
शोध-छात्रा

कोल्हापुर
दिनांक : 26 JUN 1996

प्राक्कथन

प्राक्कथन

उपेंद्रनाथ अश्कजी समाज की यथार्थता से जुड़े हुए प्रतिभासंपन्न लेखक थे। उनके साहित्य के यथार्थवादी चित्रण ने मुझे उनके नाटकों की ओर आकर्षित किया। उनके केवल चारही नाटकों पर आज तक शोध-कार्य हो चुका है। उनके "कैद" और "उड़ान" नाटक पढ़तेही मुझे उनके नारीविषयक अलग दृष्टि का पता चला और मैंने उनके सभी नाटकों की नायिकाओं पर शोधकार्य करने का निश्चय कर लिया। साथही मेरे गुरूवर्य अर्जुन चव्हाणजी ने भी इस विषयपर शोधकार्य करने के लिए मुझे प्रोत्साहित किया।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न थे -

(१) उपेंद्रनाथ अश्कजी का जीवन किस तरह बीता ?

(२) क्या उनके नाटको में समस्याएँ दिखाई देती हैं ?

(३) उनके नाटकों की नायिकाओं का स्वरूप किस प्रकार का है ?

(४) उनके नाटकों की नायिकाओं का परिवार के अन्य सदस्यों के साथ संबंध कैसा रहा है ?

(५) क्या अश्कजी अपने नाटकों की नायिकाओं के अंतर्मन तक पहुँचे हैं ?

(६) अश्कजी के नाटकों की नायिकाओं की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ?

अध्ययन के उपरांत इन प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है।

प्रस्तुत विषय के विवेचन के लिए मैंने अध्याय विभाजन इस तरह किया है -

पहला अध्याय -

पहला अध्याय "उपेंद्रनाथ अश्क का जीवन तथा साहित्य : एक सामान्य परिचय" नाम से अभिहित है। इस अध्याय में अश्कजी का जीवन परिचय संक्षेप में दिया है। फिर उनके बहुविध पहलुओं पर नजर डाली है। उनके बहुमुखी साहित्य का "कृतित्व" में परिचय दिया है साथही उनके साहित्य का उनके जीवन से किसप्रकार का संबंध है इसका भी चित्रण किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

दूसरा अध्याय -

इस अध्याय का शीर्षक है "उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों का संक्षिप्त विवेचन।" इसमें अश्कजी के सभी नाटकों का सार रूप में विवेचन किया है। साथ-साथ प्रकाशन तिथि देकर हर एक नाटक में चित्रित विविध समस्याओं का उद्‌घाटन किया है।

तीसरा अध्याय -

इस अध्याय का शीर्षक है "उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का स्वरूप।" इस तीसरे अध्याय में उनके नाटकों की नायिकाओं का स्वरूप किसप्रकार का है इसका विवरण दिया है। नाटकों की नायिकाओं का शैक्षिक, वर्गीय और आर्थिक दृष्टिकोण के द्वारा स्वरूप स्पष्ट किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

चौथा अध्याय -

यह अध्याय "उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का पारिवारिक जीवन" नाम से अभिहित है। इस अध्याय में परिवार की परिभाषा और स्वरूप देकर भारतीय समाजव्यवस्था में परिवार का स्थान किस प्रकार का है यह दिखाया है। साथही विवेच्य नाटकों की नायिकाओं का परिवार के सदस्यों से किसप्रकार संबंध है यह भी स्पष्ट किया है और अध्याय के अन्त में निष्कर्ष दर्ज है।

पाँचवाँ अध्याय -

यह अध्याय "उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं का मनोविज्ञान" नाम से अभिहित है। इस अध्याय में मनोविज्ञान के अंतर्गत नायिकाओं की मनोदशा, अहं, काम और कुण्ठा का चित्रण किया है। अध्याय के अन्त में निष्कर्ष दर्ज है।

छठा अध्याय -

"उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों की नायिकाओं की विशेषताएँ" शीर्षक से सम्बोधित इस अध्याय में अश्क के नाटकों की नायिकाओं की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। उन्हें आदर्श,विद्रोही,रूढ़िबध्द और मानसिक कुण्ठा से ग्रस्त आदि विशेषताओं के अंतगर्त रखा है और अध्याय के अन्त में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

समग्र अध्यायों के विवेचन - विश्लेषण के उपरांत "उपसंहार" लिख दिया है। यह अंश इस लघु शोध-प्रबंध का सार-रूप है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पद्धति से निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं। तद्उपरान्त परिशिष्ट क्र.१ दिया है जिसमें अश्कजी का पत्र दर्ज है जिसका उपयोग इस लघु शोध प्रबंध के लेखन में हुआ है। अश्कजी की लिखावट की यह अच्छी मिसाल भी है।

अंत में आधार ग्रन्थ तथा सन्दर्भ ग्रन्थ सूची दर्ज की है।

-: ऋण निर्देशन :-

इस लघु शोध प्रबंध की पूर्ति में मेरी सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य मैंने श्रध्देय गुरूवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाणजी के निर्देशन में पूर्ण किया है। अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी आपने समय-समय पर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के अध्ययन में मुझे गति और उत्साह दिया। आपके मार्गदर्शन के बिना यह कार्य असंभव था इसलिए मैं आपकी अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष आदरणीय गुरूवर्य डॉ.पी.एस.पाटीलजी, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ.वसंत केशव मोरे जी का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरे साथ रहा।

मेरे आदरणीय पूज्य पिताजी श्री.नामदेवराव चिले और माताजी श्रीमती शांता चिले जिनके प्रोत्साहन तथा आशीर्वाद के बिना यह कार्य असंभव था, उनकी मैं हमेशा के लिए ऋणी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से मुझे अनेक ग्रंथों का लाभ हुआ। ग्रंथालय के पदाधिकारी तथा ग्रंथालय में कार्य करनेवाले लोगों ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनका भी आभार प्रकट करती हूँ। उन ग्रन्थकार-लेखकों का आभार प्रकट करना अपना दायित्व समझती हूँ जिनके ग्रन्थों से मैं लाभान्वित हुअी हूँ।

मेरे सहपाठी, सहेलियाँ और कई हितचिंतकों की शुभकामनाएँ मेरे साथ रही उनको भी मैं धन्यवाद देती हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य का टंकलेखन सुचारू रूप से करनेवाले श्री.मिलिंद भोसले जी की भी मैं आभारी हूँ।

अन्त में विनम्रता के साथ मैं अपना लघु शोध-प्रबंध विद्वज्जनों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

कोल्हापुर

दिनांक :

शोध-छात्रा

(कु.प्रतिभा नामदेवराव चिले)